IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, November 2022
Impact Factor: 6.252

माखनलाल चतुर्वेदी की समग्र राष्ट्रीय विचारधारा

'विनोद दुबे', 'डॉ. प्रेमशंकर शुक्ला'
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, एस. आर. पी. कालेज, हनुमना, रीवा (म.प्र.)

सारांश –

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में साहित्यकारों ने भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। उन्होंने अपनी लेखनी की धार से स्वतंत्रता संग्राम को एक नया स्वर दिया और इसमें माखनलाल चतुर्वेदी जी का नाम अत्यंत आदरणीय है। उनकी विचारधारा पूर्णतः राष्ट्र के प्रति समर्पिप थी। उनका सपना समग्र भारत एक का था। पण्डित जी ने अपनी लेखनी और क्रान्तिकारी विचारधारा से देशवासियों के हृदय में राष्ट्र–प्रेम की गंगा प्रवाहित करने का भरसक प्रयास किया था। वे देश के एक सच्चे राष्ट्रभक्त थे।

शब्द कुंजी : माखनलाल चतुर्वेदी, राष्ट्रीय विचारधारा

पण्डित जी की पत्रकारिता में राष्ट्र–भक्ति की भावना कूट–कूट कर भरी थी। चतुर्वेदी जी एक निडर पत्रकार थे, पण्डित जी की राष्ट्र के प्रति चैतन्य भावना को उनके द्वारा मुखरित सभी राष्ट्रीय समस्याओं, राजनैतिक लेखों एवं टिप्पणियों में देखा जा सकता है।

पण्डित जी की पत्रकारिता में बालगंगाधर तिलक एवं महात्मा गाँधी जी की विचारधारा की स्पष्ट झलक देखी जा सकती है। पण्डित जी का राजनैतिक दृष्टिकोण महात्मा गाँधी जी की ही तरह छल–कपट, प्रपंच एवं हिंसा की कालिख से कोसों दूर मानवता के प्रति उदारवादी रवैये को संजोए प्रगति की आधारशिला पर स्तंभित था। उन्होंने राजनीति को हथियार के रूप में न अपना कर बल्कि जन मानस के हितार्थ में लिया। उनके नजर में राजनीति को सत्ता का साधन न मानकर जनता के कल्याण के उपयोग में लाना चाहिए। उनकी नजर में राजनीति का आरम्भ स्वतंत्रता के पवित्र कार्यक्रम से होना चाहिए। पण्डित जी की राजनैतिक विचारधारा बालगंगाधर तिलक जी एवं महात्मा गाँधी जी की विचारधारा से ही प्रेरित थी। पण्डित जी की राजनैतिक परिवेश राष्ट्रीय अखण्डता एवं सांस्कृतिक सामूहिकता की पावन भूमि की पृष्ठभूमि पर टिका था।

राष्ट्र के प्रति हित की भावना पण्डित जी के समग्र जीवन पर हावी थी। अपने इसी राष्ट्र–प्रेम की वजह से पण्डित जी ने अपनी शिक्षक की नौकरी का परित्याग कर दिया। पण्डित जी ने पत्रकारिता को ही अपने जीवन का मूल उद्देश्य बना लिया। पण्डित जी का मानना था कि वे एक पत्रकार के रूप में ही देश की सेवा कर सकते हैं, और पण्डित जी ने ऐसा किया भी। पण्डित जी ने पत्रकारिता को व्यवसाय के तौर पर न देखकर बल्कि देश–भक्ति का माध्यम बनाया। उनकी दृष्टि में पत्रकारिता से बढ़कर कोई दूसरा जीवन का

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, November 2022
Impact Factor: 6.252

आदर्श नहीं था। पत्रकारिता के माध्यम से राष्ट्र–भक्ति का स्वर पण्डित जी ने ही मुखरित किया था। पण्डित जी की दृष्टि में राष्ट्र सेवा के नाम पर अपना सर्वस्व न्योछावर कर देना ही सबसे बड़ा उत्सव है–

"बलिशाला हो, मधुशाला प्रियतम, पथ को देश निकाला।
प्राणों का आसव हो ढाला गिरे न उसमें दायरी,
यौवन मद झरि सखि जाग री।"[24]

स्वाधीनता हेतु खुशी–खुशी अपने प्राणों की आहुति दे देने वाले रण बांकुरों को पण्डित जी सदा श्रद्धासुमन अर्पित करते थे। वे उन्हें आदर्श मानने की प्रेरणा देते थे। अपने देश को स्वतंत्र कराने की राह में उन्हें न अपनी मौत का डर था और न ही ब्रिटिश हुकुमत के द्वारा कारावास में रह रहे कैदियों पर किए गए जुल्मों–सितम की दहशत का। उनकी दृष्टि में ब्रिटिश हुकुमत की बेड़ियों को वे गहनों की ही भाँति देखते थे–

"क्या देख न सकती जंजीरों का गहना,
हथकड़ियाँ क्या? यह ब्रिटिश राज का गहना।"[25]

पण्डित जी ने राष्ट्रीयता को राष्ट्र, मानव एवं सभ्यता की त्रिवेणी के संगम से परिभाषित किया है। उनकी दृष्टि में राष्ट्र–हित का चिंतन अति आवश्यक था। वे सदा यही अभिलाषा करते थे कि भारत देश स्वयं तो आजाद हो ही साथ–साथ अन्य देश जो गुलामी की जंजीरों में बँधे हैं उन्हें भी आजाद कराने में सहायक सिद्ध हो। पण्डित जी के पत्रकारिता के दो भाग थे, प्रथम स्वतंत्रता से पहले तथा दूसरा बाद में।

पण्डित जी की पत्रकारिता में क्रान्तिकारी विचारधारा प्रवाहित होती थी। उनका मानना था कि पहले वे एक क्रान्तिकारी हैं, बाद में एक पत्रकारहालांकि उन्होने अपनी पत्रकारिता में कभी भी क्रान्तिकारी विचारधारा को जोर नहीं दिया। पण्डित जी के लेखों में राष्ट्रवाद की झलक सदैव मिलती थी, वे समाज की प्रगति को भी देश हित के लिए आवश्यक मानते थे। अपने एक लेख में पण्डित जी ने लिखा है, **"शासन की खराबी और क्या होगी? जार्ज पंचम का ब्रिटिश शासन केवल धन की लूट है के ही सिद्धान्त पर नहीं चल रहा? और क्या यह शासन व्यवसाय नहीं रहा है? ब्रिटिश जाति यहाँ शासन किसलिए करती है? वे गोरे लोग जो कहते हैं कि "हमने तुम्हें छल–कपट से या जैसे कहो जीता है। और हम तुम पर राज करेंगे, किस कदर सच्चे हैं। परन्तु इनकी इस सच्चाई के साथ ब्रिटिश राजनीतिज्ञ कभी सहमत नहीं होता, लड़ने और कहने वाला सिपाही इशारे के बल पर आगे या पीछे पैर बढ़ाता है। उस बेचारे को यह भी नहीं मालूम नहीं होता कि उसे क्यों लड़ाई लड़नी पड़ रही है। क्यों आशाएँ दिलाकर विश्वासघात करना पड़ रहा है। वह चलता है दूसरे के इशारे पर ये इशारा देने वाले लोग वे राजनीतिज्ञ है, जो दूर की सोचते हैं, और सभ्यता की उन्नति के लिए ही अपने जीवन की सार्थकता समझते हैं।"**[26]

पण्डित जी की पत्रकारिता में क्रान्तिकारी चेतना का सागर हमेशा लहराता था, एक बार तात्कालीन समाज पर दृष्टिपात करते हुए चतुर्वेदी जी ने कहा था कि, **"इंग्लैंड के चतुरों ने कभी मुँहफट होकर नहीं कहा है कि हमने तुम्हें 'येन केन प्रकारेण' जीता है। अतएव हम तुम पर राज करेंगे, यदि वे ऐसा कहेंगे तो**

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, November 2022
Impact Factor: 6.252

हिन्दुस्तानियों के श्रद्धालु मस्तिष्क पर वह घोर प्रतिक्रिया हो जिससे बलवान से बलवान शासन की नींव भी खुद जाए, यह प्रतिक्रिया इंग्लैण्ड के राजनीतिज्ञों की दृष्टि से कभी भी वांछनीय नहीं हो सकती और इसलिए वे दिन मे, रात में, जागृति में, स्वप्न में, यही कहते रहते हैं कि, "हम हिन्दुस्तान की भलाई के लिए ही हिन्दुस्तान में राज करते हैं।"[27]

समाज के प्रति प्रगतिशील दृष्टिकोण पण्डित जी की बहुत बड़ी खासियत थी। पण्डित जी समाज में हो रहे हर प्रकार के शोषण के विरूद्ध आवाज उठाना जानते थे। समाज में व्याप्त दुराचार, अन्याय, दकियानूसी विचारधारा, पाखण्ड, अन्धविश्वास के विरूद्ध उनकी लेखनी सदा मुखरित रही है। भारत देश के दलितों, शोषितों एवं सदियों से उत्पीड़ित हो रहे इंसानों के लिए वो हमेशा संवेदनशील थे। पण्डित जी ने समाज में प्रचलित कुप्रथाओं एवं कठिनाईयों के बारे में हमेशा लिखते थे, पण्डित जी के बारे में लोगों की राय यही रहती थी वे एक समाजसुधारक पहले हैं, पत्रकार बाद में।

यह बात तो अटल सत्य है कि समाज को प्रगतिशील बनाने में पत्रकारिता का बहुत बड़ा हाथ है। हालांकि पत्रकारिता के अनैतिक उपयोग से समाज में बुराईयाँ भी फैलती हैं। लेकिन फिर भी हमें सिर्फ उसके उचित उपयोग पर ही ध्यान देना चाहिए। समाज के प्रत्येक क्षेत्र में चाहे वह राजनैतिक हो, सामाजिक हो, धार्मिक हो, नैतिक, शैक्षिक, औद्योगिक, आर्थिक, साहित्यिक, व्यवसायिक, कला, वैज्ञानिकी, तकनीकी, दार्शनिक, कानून पर एक पत्रकार की पैनी दृष्टि रहती है। ये ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें एक पत्रकार के लिए सदा ही कहने के लिए बना रहता है। पण्डित जी का कहना है कि, **"समाज को चाहिए कि वह सद्विचारों और अनुकूल आदर्शों की पूर्ति का सहायक बना रहे, मर न जावे यह समय बड़ा ही विचित्र है उसे इस समय दूर देशों में पड़े रहने वाले अपने अंगों पर से क्षण–भर भी अपनी दृष्टि न हटानी चाहिए कि यदि दक्षिण अफ्रीका में मैं होता तथा यदि मैं श्रीयुत गाँधी के कष्टों को देखता हुआ वहाँ के कष्टों को भोगता, तो मेरे हृदय में भारतवर्ष से सहायता पाने की इच्छा कैसी जागृत होती? जब मैं विदेश में रहकर कष्ट भोगता रहता तब मेरा विशाल देश क्या मुझे इस प्रकार भूल जाता।"[28]**

लेकिन इसके बाद किसी भी बुद्धिमान पत्रकार को पत्रकारिता के कार्य को लेकर मन में कोई भी अनुचित भाव नहीं बनाने चाहिए। क्योंकि पत्रकार चाहे जैसा भी लिखें उसका असर अल्पकाल के लिए ही होता है। पण्डित जी कहते थे कि, **"कुरीतियों को दमन करने का कार्य कल के लिए न छोड़ो, यह पक्का स्मरण रखो कि समयरूपी दूध पीकर इन भयंकर साँपों का विष बढ़ रहा है। इनमें नाशक प्रकृति की मात्रा भी बढ़ रही है। समाज के इन सच्चे शत्रु आत्माओं को नाश करने में प्राणार्पण से भिड़ जाओ, उठो समय व्यर्थ मत खोओ, यह संसार तुम्हारी ओर घृणा और अपमान की दृष्टि से देख रहा है।"[29]**

पण्डित जी पत्रकारों को सतर्क रहने का मशवरा देते हैं, पत्रकारिता के क्षेत्र में भी लालच और चकाचौंध भरी पड़ी है, क्योंकि इस लालच और चकाचौंध से जो भी हमें प्राप्त होता है उसका कोई भी स्थायित्व नहीं है। पण्डित जी कहते हैं, **"केवल कहने से ही सुधार नहीं हो जाता मन के लड्डुओं से भूख नहीं**

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, November 2022
Impact Factor: 6.252

भागती कार्यकारी ही कुछ सुधार कर सकते हैं। उन्हीं ने समय–समय पर सुधार किया है। सुधारवादियों के सच्चे आदर्श होते हैं। भगवान श्रीकृष्ण के बारे में समय और देश की आत्मा जानती है कि भगवान कृष्ण चंद्र ने सुधार मार्ग में क्या–क्या किया। यदि कोई अकारण अशांति या अपवित्रता ले, तो यह उसकी भूल है। सुधारकारियों में उच्छृंखलता होना उसका लड़कपन प्रकट करता है, कि निन्दा की वृत्ति यह सूचित करती है कि सुधारकर्ता स्वयं निन्दा के योग्य है। उसकी घृणा यह बताती है कियह बुराईयों के सम्मुख लड़ने में असमर्थ है। अशान्ति से सुधारक की मानसिक दुर्बलता प्रकट होती है। अपवित्रता से यह ज्ञात होता है कि यह सुधारक नहीं, आलसी और नपुंसक है। जो संसार की उन्नति स्वरूप, सुरीतियों की सीढ़ीयों को भी, उन पर चढ़ने में निर्बल होकर, तोड़कर या तुड़वाकर, संसार को आपत्तियों में डालने का पाप अपने सिर पर लेना चाहता है। वह सुधारवादी ''महामूर्ख'' नही तो कौन है।''[30]

पण्डित जी के जीवन के दो ही उद्देश्य थे, पहला देश की आजादी एवं दूसरा देश का सुधार, जिसके लिए वो पत्रकारिता को सबसे कारगर हथियार मानते थे। पण्डित जी ''हुँकार'' के रचयिता थे। वो अपने दुख से दुखी नहीं थे, बल्कि समाज के सताए हुए दलितों, शोषितों, एवं उत्पीड़ितों का दुख उन्हें बहुत परेशान करता था। समाज को जागरूक करने में उनकी बहुत बड़ी भूमिका थी। इंसानों का इतना शोषण होते हुए देख कर उनकी आत्मा कराह उठती थी। उनके कलम की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वह जन मंगल कल्याण के लिए ज्यादा चलती थी। पण्डित जी ने लिखा है, **''सामाजिक जीवन की दुर्दशा कर भारतवर्ष को मूखर्ता के गड्ढे में डालने वालों ने दिखाऊ धर्म की निकम्मी जंजीर से समाज को बाँध डाला है। कदाचित वे इसी को धर्म–प्राणता का स्वरूप समझते हों, परन्तु अब वह बन्धन टूट रहा है। शीघ्र ही आवश्यकतानुसार सामाजिक बन्धनों को रखने वाले नवयुवकों का दल सामाजिकता का साथ देने के लिए सामाजिक रंगमंच पर उपस्थित होगा इस नकली धर्म–प्राणता की बीमारी की अवधि बिलकुल थोड़ी रही।''**[31]

सन्दर्भ–सूची

1. 'माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली खण्ड–10 हिन्दी दिग्दर्शन', संपादक श्रीकान्त जोशी, पृष्ठ7
2. 'कैदी और कोकिला', माखनलाल चतुर्वेदी, ूणंअपजांवेीण्वतह
3. 'माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली खण्ड–10', संपादक श्रीकान्त जोशी, कर्मवीर 20 जून 1925, पृष्ठ 35
4. 'माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली खण्ड–10', संपादक श्रीकान्त जोशी, कर्मवीर 20 जून 1925, पृष्ठ 35
5. 'माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली खण्ड–2', संपादक श्रीकान्त जोशी, कर्मवीर 1913, पृष्ठ 23
6. 'माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली खण्ड–2', संपादक श्रीकान्त जोशी, कर्मवीर 1914, पृष्ठ 26
7. 'माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली खण्ड–2', संपादक श्रीकान्त जोशी, प्रभा 1914, पृष्ठ 27
8. 'माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली खण्ड–2', संपादक श्रीकान्त जोशी, पृष्ठ 22